दशावतार-विमर्श

❑ पद्मविभूषित धर्मचक्रवर्ती, श्रीचित्रकूटतुलसीपीठाधीश्वर
जगद्गुरु रामानन्दाचार्य स्वामी रामभद्राचार्य जी महाराज

(सम्पूर्ण प्राणियों के सर्वविध अभ्युदय को मन-वाणी और कर्म से चाहने वाले ''सनातनधर्म'' को आदिकाल से अनेक ऋषि-मुनि-आचार्यों ने अपने मौलिक चिन्तन से कालजयी बनाया है। वर्तमान में ऐसे ही आचार्यों की परम्परा में पूज्यपाद जगद्गुरु रामानन्दाचार्य स्वामी रामभद्राचार्य जी महाराज मूर्धन्य महापुरुष एवं आप्तपुरुष हैं। अर्चनीय आचार्यश्री के मुख से विगत माह इन्दौर (म०प्र०) में श्रीमद्भागवतकथा की मन्दाकिनी निस्सृत हुई थी, जिसका संस्कार चैनल पर भी जीवन्त प्रसारण हुआ था, उसमें पूज्यपाद गुरुदेव का बहुत विलक्षण तथा अश्रुतपूर्व व्याख्यान हुआ। जिज्ञासु जनता-जनार्दन के लाभार्थ केवल एक दिन की कथा यहाँ प्रस्तुत की जा रही है। प्रस्तुत लेख में ''जन्माद्यस्ययतः'' (भागवत १/१/१) श्लोक से ही पूज्यपाद आचार्यचरणों ने दशावतारों पर ऐतिहासिक एवं शास्त्रीय व्याख्यान प्रस्तुत किया है। आज शास्त्रीय प्रतिभा की दिव्यातिदिव्य प्रतिमा को प्रणाम करते हुए यह लेख अपने सुधी पाठकों के हितार्थ प्रस्तुत है) -प्रधान सम्पादक

हरि हरि, हरि हरि, सुमिरन करो, हरि चरणारविन्द उर धरो
हरि की कथा होत है जहाँ, गंगा ऊ चलि आवै तहाँ।
हरि हरि, हरि हरि, सुमिरन करो...
यमुना सिंधु सरस्वती आवै, गोदावरी विलम्ब न लावै
सब तीर्थ को वासा तहाँ, 'सूर' हरि कथा होवे जहाँ।।
हरि हरि, हरि हरि, सुमिरन करो...

ॐ नमः परमहंसास्वादित चरणकमल चिन्मकरन्दाय।
भक्तजनमानसनिवासाय श्रीरामचन्द्राय।।

**यस्यामलं नृपसदस्सु यशोऽधुनापि,
गायन्त्यघघ्नमृषयो दिग्गिभेन्द्रपट्टम्।
तं नाकपालवसुपालकिरीटजुष्ट,
पादाम्बुजं रघुपतिं शरणं प्रपद्ये।।**

**श्रीकृष्ण कृष्णसख वृष्ण्यृषभावनिध्रुग-
राजन्यवंशदहनानपवर्गवीर्य ।
गोविन्द गोद्विजसुरार्तिहरावतार
योगेश्वराखिलगुरो भगवन्नमस्ते।।**

**नमस्यामः शुकाचार्यं वासिष्ठं व्याससम्भवम्।
पिबामो यन्मुखाम्भोजच्युतं भागवतामृतम्।।
श्रीसीतानाथसमारम्भां श्रीरामानन्दार्यमध्यमाम्।
अस्मदाचार्यपर्यन्तां वन्दे श्रीगुरुपरम्पराम्।।
श्रीशुकाचार्य के पदकमल पुनि पुनि करउँ प्रणाम।
श्रीमदभागवती कथा करउ सुजन अभिराम।।
सियावर रामचन्द्र भगवान् की जय।
राधावर कृष्णचन्द्र की जय।**

राधे गोविन्द, गोविन्द राधे, राधे गोविन्द, गोविन्द राधे।
राधे गोविन्द गोविन्द राधे, राधे राधे गोविन्द गोविन्द राधे।

**जन्माद्यस्य यतोऽन्वयादितरतश्चार्थेष्वभिज्ञः स्वराट्
तेने ब्रह्म हृदा च आदिकवये मुह्यन्ति यत्सूरयः।
तेजोवारिमृदां यथा विनिमयो यत्र त्रिसर्गोऽमृषा
धाम्ना स्वेन सदा निरस्तकुहकं सत्यं परं धीमहि।।**
(श्रीभागवत० १.१.१)

परिपूर्णतम परात्पर परमात्मा भगवान् सीतारामजी की बड़ी कृपा और उन्हीं के अभिन्न स्वरूप भगवान् राधागोविन्दजी की अनुकम्पा से आज हम परमहंस संहिता के द्वितीय सत्र में एक अद्भुत सिद्धान्त की ओर जा रहे हैं आपको। जैसा कि कल मैंने कहा– **विद्यावतां भागवते परीक्षा** अर्थात् भागवतजी में विद्वानों की परीक्षा होती है और **विद्याभागवतेऽवधि** अर्थात् सम्पूर्ण विद्या भागवतजी में आकर सिमट गईं हैं। मित्रो ! आज चलिये, प्रथम श्लोक के आधार पर एक अश्रुतपूर्व चर्चा करते हैं। हमारी हिन्दू वैदिक सनातन संस्कृति जो भारतीय संस्कृति है, उसमें भगवान् के अवतार की चर्चा है। भगवान् का अवतार होता है और यदि मैं कहूँ कि **भगवान् के अवतार की**

कथा ही भागवत कथा है तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। अवतार का हिन्दी में अर्थ क्या होता है? अवतरण अर्थात् उतरना। भगवान् उतरते हैं। कब उतरते हैं? क्यों उतरते हैं? अब यहाँ प्रश्न यह है– उतरता वो है, जो ऊपर होता है। तो भगवान् तो ऊपर भी हैं, नीचे भी हैं। फिर उनके अवतार की चर्चा क्यों की जा रही है?

अथाख्याहि हरेर्धीमन्नवतारकथाः शुभा (भा०पु० १.१.१८)। अवतार कथासुधा। क्या है अवतार? कहाँ से उतरते हैं भगवान्? ऊपर से नीचे आते हैं। यह नहीं है। अपनी कक्षा से उतर आते हैं, यही भगवान् का अवतार है। कक्षा से अर्थात् जो भगवान् व्यापक हैं, सर्वव्यापी हैं, वे ही व्यापी बन जाते हैं–यही उनका अवतार है। जो भगवान् बहुत बड़े हैं, बहुत छोटे हो जाते हैं– यही उनका अवतार है। जो भगवान निरञ्जन हैं, निरञ्जन कह जाते हैं वे ही भगवान् अपने नेत्र में अञ्जन लगा लेते हैं–यही उनका अवतार है। जो भगवान् निर्गुण हैं, सत्वगुण, रजोगुण, तमोगुण में नहीं है, वे ही दिव्य–दिव्य गुणों को स्वीकार करते हैं–यही उनका अवतार है। जो भगवान् अजन्मा हैं, जन्म नहीं लेते, वे भक्तों के लिए जन्म ले लेते हैं–यही उनका अवतार है। अर्थात् **अपने सम्बन्धियों की इच्छा से भिन्न-भिन्न सम्बन्धों की स्वीकृति ही भगवान् का अवतार है।** अब हैं वे सबके पिता, परन्तु दशरथ कौसल्या ने कह दिया– "बने रहें आप सबके पिता! हम तो आपको बेटा मानेंगे।" तो सारे संसार का बाप दशरथ–कौसल्या का बेटा बन जाए–यही भगवान् का अवतार है। **अवतार माने सम्बन्धियों की कक्षाओं को स्वीकारना।** "सम्बन्धीनां कक्षा स्वीकारः अवतारः" और सनातन धर्म का यह सबसे बड़ा रस भी है। यह सबसे बड़ा आनन्द है, इसलिए कहा–

अथाख्याहि हरेर्धीमन्नवतारकथाः शुभाः

(भा०पु० १.१.१८)

हमारी भारतीय हिन्दू वैदिक संस्कृति में वेदों ने भी भगवान् का अवतार माना है–

प्रजापतिश्चरति गर्भे अन्तरजायमानो बहुधा विजायते।
तस्य योनिं परि पश्यन्ति धीरास्तास्मिन् ह तस्थुर्भुवनानि विश्वाः।।

(य.वे. ३१.१९)

मैं यह चर्चा जानकर कर रहा हूँ, क्योंकि यह कथा मैं सामान्य व्यक्ति को नहीं सुना रहा हूँ। यह कथा इस मन्दिर की मुख्य अधिष्ठात्री माँ विन्ध्यवासिनी सुन रही हैं। इस कथा को भगवान् रामजी, सीताजी, लक्ष्मणजी, हनुमानजी, शिव परिवार आदि सब सुन रहे हैं अद्भुत आनन्द है। और मेरी पहचान भी इसी में है कि मैं कोई शास्त्रीय चर्चा सुनाऊँ, सरलता से सुनाऊँ। शुक्ल यजुर्वेद ने कह दिया–प्रजापतिश्चरति गर्भे अन्तरजायमानो बहुधा विजायते।

प्रजापतिः–भगवान्, गर्भे–छोटे से बालक बनकर कौसल्याजी के गर्भ में, देवकीजी के गर्भ में, यशोदाजी के गर्भ में, चरति–भ्रमण करते हैं, आनन्द करते हैं–

जा दिन ते हरि गर्भहिं आए।
सकल लोक सुख सम्पति छाए।।

(श्रीमानस १.१९०.६)

यहाँ तो भगवान् गर्भ में आते हैं। अन्तरजायमानो बहुधा विजायते–प्राकृतिक बालक की भाँति जन्म न लेते हुए भी भगवान् बहुत प्रकार से जन्म लेते हैं। बहुधा विजायते कह रहे हैं। कभी कच्छप रूप बनाते हैं, कभी मत्स्य बन जाते हैं, कभी वराह बन जाते हैं, कभी नरसिंह बन जाते हैं, कभी वामन बन जाते हैं, कभी परशुराम बन जाते हैं, कभी भगवान् राम बन जाते हैं, कभी बलराम बन जाते हैं, कभी श्रीकृष्ण बन जाते हैं, कभी कल्कि बन जाते हैं। हमारे यहाँ गायत्री में २४ अक्षर कहे जाते हैं–

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

यहाँ २४ अक्षर हैं। २४ अक्षरों का क्या तात्पर्य है? यद्यपि भगवान् के असंख्य अवतार हैं– अवतारा ह्यसङ्ख्येया (भा०पु० १.३.२६) फिर भी भक्तमालकार ने २४ अवतार कहे। २४ रूप–लीलाएँ रचीं। उनकी मान्यता है कि एक दिन में २४ घंटे होते हैं, अतः यह भक्त को

ज्ञान रहना चाहिए कि जो भगवान् का भजन करते हैं, उनकी रक्षा करने के लिए चौबीसों घंटे भगवान् एक-एक अवतार लेकर खड़े रहते हैं। एक दिन में कितने घंटे हुए मित्रो? २४ घंटे। तो भगवान् कह रहे हैं- "चिन्ता मत करो! चौबीसों घंटे हम तुम्हारी रक्षा करेंगे एक-एक अवतार लेकर।"

और अब मैं आपको यह कहने जा रहा हूँ कि इन्हीं चौबीसों अवतारों की चर्चा पूरी भागवतजी में कही गयी है। चौबीस अवतारों पर चर्चा फिर कभी करूँगा। अभी दस अवतारों की चर्चा करूँगा।

(१) सनकादि अवतार, (२) वराह अवतार, (३) नारद अवतार, (४) नर-नारायण अवतार, (५) कपिल अवतार, (६) दत्तात्रेय अवतार, (७) यज्ञनारायण अवतार, (८) ऋषभदेव अवतार, (९) पृथु अवतार, (१०) मत्स्य अवतार, (११) कच्छप अवतार, (१२) धन्वन्तरि अवतार, (१३) मोहिनी अवतार, (१४) नरसिंह अवतार, (१५) वामन अवतार, (१६) परशुराम अवतार, (१७) वेदव्यास अवतार, (१८) श्रीराम अवतार, (१९) बलराम अवतार (भागवत में है), (२०) कृष्ण अवतार, (२१) हंस अवतार, (२२) हयग्रीव अवतार, (२३) गजेन्द्र के लिए हरि अवतार, (२४) ध्रुव के लिए सहस्रशीर्षा अवतार, और अन्त में (२५) जगन्नाथ अवतार और (२६) कल्कि अवतार।

ये चौबीस अवतार हमारे यहाँ माने गये हैं। अवतार तो बहुत हैं, पर २४ की चर्चा भक्तमालकार ने की है। परन्तु उनमें भी संक्षेप में जो बहुत प्रचलित हैं, वे दस अवतार हैं। इसमें कुछ लोगों को भ्राँतियाँ हैं और थोड़ा गड़बड़ भी हो गया है। कुछ लोगों ने बुद्ध को अवतार माना, जबकि वास्तव में ऐसा है नहीं। इसका श्लोक ध्यान से सुनिये-

मत्स्यः कूर्मो वराहश्च नृसिंहो वामनस्तथा।
रामो रामश्च कृष्णश्च बौद्धः कल्कि तथैव च।।

दस अवतार हैं हमारे- (१) मत्स्य अवतार (२) कच्छप अवतार (३) वराह अवतार (४) नरसिंह अवतार (५) वामन अवतार (६) परशुराम अवतार (७) श्रीराम अवतार, (८) बलराम अवतार, (९) श्रीकृष्ण अवतार और (१०) कल्कि अवतार। हमारी वैदिक हिन्दू भारतीय संस्कृति में ये दशावतार कहे गये हैं और इन्हीं की चर्चा पुरुष सूक्त के प्रथम मन्त्र में कही गयी है-

ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्।
स भूमि गुं सर्वतः स्पृत्वाऽत्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम्।।
(ऋ.वे. १०.९०)

यह जो दशाङ्गुलम् हैं, यही दशावतारों की सूचना देता है। आज आवश्यकता है कि भीड़ जुटे या न जुटे, पर वैदिक हिन्दू सनातनधर्म के सिद्धान्त जन-जन तक पहुँचा दिए जाएँ। श्रोता कम ही हों पर सिंह श्रोता चाहिएँ, भीड़ नहीं चाहिए। तो देखिये!

दशाङ्गुलम् शब्द से संकेत कर वेद ने भी भगवान् के दस मुख्य अवतार माने।

मत्स्यः कूर्मो वराहश्च नृसिंहो वामनस्तथा।
रामो रामश्च कृष्णश्च बौद्धः कल्कि तथैव च।।

इसलिए कहा जाता है। हमारे यहाँ बहुत अच्छा गीत है यह-

कभी राम बन के, कभी श्याम बने के
चले आना प्रभुजी चले आना।
कभी राम रूप में आना, संग में हनुमत को लाना
सीता साथ ले के, धनुष हाथ ले के
चले आना प्रभुजी चले आना।
कभी कच्छप रूप में आना, पीठ मन्दराचल को लाना
कृपा साथ ले के, वर हाथ ले के
चले आना प्रभुजी चले आना।
कभी राम बन के, कभी श्याम बन के
चले आना प्रभुजी चले आना।

इस पृथ्वी को किसने धारण किया है? शेष ने। पर शेष को किसने सँभाला है? कच्छप भगवान् ने। यह मुख्य अवतार है भगवान् का। शेष ने पृथ्वी को सँभाला है और समुद्रमंथन में इन्होंने पर्वत को सँभाला। ये प्रथम अवतार हैं। दूसरा मत्स्य अवतार।

कभी मत्स्य रूप में आना, संग में पृथिवी को लाना
नाव हाथ ले के, बीज साथ ले के,
चले आना प्रभुजी चले आना।
कभी राम बन के, कभी श्याम बन के
चले आना प्रभु जी चले आना।

जब पृथ्वी डूबने लगी, तब भगवान् सत्यव्रत के पास मछली बनकर आये। अपनी सींग पर पृथ्वी को नाव बनाकर बाँधा। डूबने नहीं दिया पृथ्वी को, वहीं मनु बैठे रह गये। यह मत्स्य अवतार है।

कभी वराह रूप में आना, संग में पृथ्वी को लाना
ऋषि साथ ले के, पृथ्वी दाँत ले के
चले आना प्रभु जी चले आना।
कभी राम बन के, कभी श्याम बन के
चले आना प्रभु जी चले आना।

सोचिये! यह पृथ्वी जब हिरण्यकशिपु चुरा ले गया तो वराह बन गये भगवान् और पृथ्वी को दाँत पर रखकर ले आये।

कभी नरसिंह रूप में आना, संग में भक्त प्रह्लाद को लाना
करुणा साथ ले के, नख हाथ ले के
चले आना प्रभु जी चले आना।
कभी राम बन के, कभी श्याम बन के
चले आना प्रभु जी चले आना।
कभी वामन रूप में आना, संग में बलि राजा को लाना
भिक्षा साथ ले के, दंड हाथ ले के
चले आना प्रभु जी चले आना।

सोचिये! पञ्चम अवतार हो गया भगवान् का।

कभी परशुराम रूप में आना, संग में जगदग्नि रेणुका को लाना।
क्रोध साथ ले के, फरसा हाथ ले के
चले आना प्रभु जी चले आना।
तुम राम रूप में आना, संग में हनुमत को लाना
सीता साथ ले के, धनुष हाथ ले के
चले आना प्रभुजी चले आना।
कभी बलराम रूप में आना, संग में रेवती माँ को लाना
हल हाथ ले के मूसल साथ ले के
चले आना प्रभु जी चले आना।
कभी कृष्ण रूप में आना, संग में नंद-यशोदा को लाना
मुरली हाथ ले के, राधा साथ ले के
चले आना प्रभुजी चले आना।
कभी कल्कि रूप में आना, संग में पद्मावती को लाना
अश्व साथ ले के, खड्ग हाथ ले के
चले आना प्रभुजी चले आना।
कभी रामानंदाचार्य बनके आना, संग में साधु-संतों को लाना
त्रिदंड हाथ ले के, शास्त्र साथ ले के
चले आना प्रभुजी चले आना।
कभी राम बन के, कभी श्याम बन के
चले आना प्रभुजी चले आना।

।।बोलिये दशावतार भगवान् की जय हो।।

अपने जीवन की ५०० कथाएँ भागवत की हम कर चुके, पर आज मुझे लग रहा है कि आज मैंने सबसे उत्कृष्ट विषय लिया है। सबसे सुन्दरतम विषय लिया है। यह मेरे जीवन का सबसे मधुरतम, सुन्दरतम और गम्भीरतम क्षण है। अब आप समझ गये होंगे कि भगवान् के दस अवतार मुख्य हैं। एक-एक अवतार में भगवान् ने क्या किया? देखिए-

(१) **कच्छप-** कच्छप अवतार से ही प्रारम्भ करते हैं। यह पृथ्वी कच्छप भगवान् के ऊपर ही टिकी हुई है। जल है, जल में कच्छप भगवान् हैं। यह कच्छपावतार है भगवान् का। उन पर शेषजी बैठे हैं और शेषजी के फण पर पृथ्वीजी बैठी हैं। यह कच्छपावतार है।

(२) **मत्स्य-** यही पृथ्वी जब डूबने को होती है तो भगवान् मत्स्य माने मछली, बनकर आते हैं और मनु से कहते हैं-''तुम मेरी सींग में नाव बाँध दो! मैं पृथ्वी को नहीं डूबने दूँगा।''

(३) **वराह-** वराह अवतार में जब हिरण्यकशिपु पृथ्वी को चुरा ले गया तो भगवान् आदिशूकर बने और पृथ्वी को ले आये। आज जो भिन्न-भिन्न स्वाद मिट्टी में देख रहे हैं, ये मिट्टी के स्वाद ही तो हैं। कितने विलक्षण-

विलक्षण फल हैं। सबके अलग-अलग स्वाद है, जो पृथ्वी की माटी में दिखायी पड़ रहा है। और यह सुन्दर महक कहाँ से आयी? मोगरा की महक अलग, गुलाब की अलग, कमल की अलग, चमेली की अलग! ये सब कहाँ से आयी? तत्र गन्धवती पृथिवी (तर्कसंग्रह)।

(४) **नृसिंह-** चौथा अवतार भगवान् ने नरसिंह अवतार लिया। श्रीप्रह्लादजी की प्रतिज्ञा पूरी की भगवान् ने। हिरण्यकशिपु बोला- "भगवान् सर्वत्र व्यापी हैं? खम्भे में भी?" "जी!" "खड्ग में भी?" "जी!" हिरण्यकशिपु ने खम्भे को एक मुक्का मारा, तो प्रह्लाद की बात सत्य करने के लिए भगवान् खम्भे को फाड़कर निकल पड़े। यह चौथा अवतार है **सत्यं विधातुं निज भृत्यभाषितम्।**

(५) **वामन-** पञ्चम अवतार वामन अवतार है। भगवान् ने वामन रूप में आकर बलि से भिक्षा माँगी-

तेरे द्वारा खड़ा भगवान, भगत भर दे रे झोली
ओ भगत भर दे रे झोली....

वामन अवतार का सबसे बड़ा प्रमाण हैं गंगाजी। पहले पग से पाताल नापा, दूसरे से सातों लोक ऊपर के, ब्रह्माजी ने चरण धोये। उन्हीं गंगाजी पर आज संकट है। मोदीजी काम कर रहे हैं अच्छा काम कर रहे हैं और लगता है कि भगवान् अच्छा करेंगे। २०१८ तक आपको पता चल जायेगा कि गंगाजी स्वच्छ हो रही हैं। अविरल धारा गंगाजी की हमें मिलेगी।

(६) **परशुराम-** छठा अवतार परशुराम अवतार। अगली अक्षयतृतीया को उनका जन्मदिन होगा। शुक्लपक्ष की तृतीया का होगा जन्म। परशुराम अवतार! एक ब्राह्मण का वर्चस्व बता दिया भगवान् ने। वह कोई ब्राह्मण होता है, जो माँगता है, खाता है, दक्षिणा लेता है? ब्राह्मण का एक वर्चस्व होता है, बता दिया भगवान् ने।

(७) **राम-** रामजी का ही सातवाँ अवतार हैं रामजी अवतारी भी हैं और अवतार भी हैं। क्योंकि दशावतार में सातवाँ अवतार है भगवान् राम का, इसलिए रामायणजी में सात काण्ड कहे गये हैं।

(८) **बलराम-** आठवाँ अवतार है बलरामजी का। जिन्होंने निरन्तर भगवान् श्रीकृष्ण की महिमा का गान किया।

(९) **कृष्ण-** नौवाँ अवतार है भगवान् कृष्ण का। वही कृष्ण कलियुग में भगवान् जगन्नाथ बन गये, वही पुरी में जगन्नाथ बन गये। **जगन्नाथ के भात को जगत पसारे हाथ।**

(१०) **कल्कि-** अब दसवाँ अवतार होगा कल्कि अवतार सम्भल ग्राम में। हमारे उत्तर प्रदेश में है मुरादाबाद के पास। सम्भल ग्राम में विष्णुयश नामक ब्राह्मण के यहाँ अवतार लेंगे भगवान् कल्कि रूप में। उनके साथ घोड़ा होगा, तलवार होगी और जितने वेद विरुद्ध होंगे, सबको काट फेंक देंगे भगवान्। संतों की रक्षा करेंगे। फिर उनके शरीर से जो सुगन्ध आएगी उसी से, शुद्ध सत्ययुग आ जायेगा, जय-जयकार होगी।

देखिये, यही है भागवत का सत्य! अब आप मत भूलियेगा। दस अवतारों को तो किसी भी मूल्य पर नहीं भूलियेगा। एक बार फिर दोहरा रहा हूँ। (१) कच्छप अवतार (२) मत्स्य अवतार, (३) वराह अवतार (४) नृसिंह अवतार, (५) वामन अवतार (६) परशुराम अवतार (७) श्रीराम अवतार (८) बलराम अवतार, (९) श्रीकृष्ण अवतार (१०) कल्कि अवतार।

इस पर एक दोहा सुनाते हैं आपको। वो दोहा कंठस्थ रहेगा, तो आप नहीं भूलेंगे-

दुइ जलचर दुइ विपिनचर तीन विप्र त्रय भूप।
'गिरिधर' उर रघुवर लसहुँ दशावतार स्वरूप।।

दुइ जलचर- माने दो जलचर अवतार हुए- (१) कच्छप अवतार और (२) मत्स्य अवतार - ये पानी में रहे हैं। दुइ विपिनचर- (१) वराह और (२) नृसिंह- ये वन में रहते हैं। तीन विप्र-तीन ब्राह्मणों के यहाँ अवतार- (१) वामन अवतार (२) परशुराम अवतार और (३) कल्कि अवतार। त्रय भूप - तीन क्षत्रियों के यहाँ अवतार -(१) राम अवतार (२) बलराम अवतार और (३) कृष्ण अवतार।

अब आइये! इन दसों अवतारों को एक ही श्लोक

में हम घटाने का प्रयास करेंगे। यही तो भागवत है! पूरी भागवत लोग नाच-नाचकर सुना देते हैं। उनको भी नहीं आता, श्रोता क्या समझे बेचारा! मैं यह बात फिर कह रहा हूँ, कोई कितना भी पैसा कमा ले, कितने भी बड़े-बड़े बाल रख ले १८-१८ इंच के, कितने भी बड़े-बड़े पंडाल बना ले, पैसे से हवेलियाँ भर ले, इससे कोई लाभ नहीं होगा। लाभ होगा व्युत्पन्न वक्तव्य से, जिससे सनातनधर्म के लोगों को कुछ हिन्दु सिद्धान्त समझ में तो आएँ। कब तक लोगों को नचाते रहोगे? इसलिए हम २१वीं शताब्दी में हैं। अब तो प्रत्येक घर में हिन्दुओं की पाठशाला होनी चाहिए।

तो चलिये! अब हम भागवतजी का पहला श्लोक पढ़ते हैं। आजकल के वक्ताओं से पूछते हैं श्लोक, तो वो कहते हैं- "हम तो इस लोक में रहते हैं। श्लोक क्या सुनायें?" यह मूर्खता की बात है।

श्लोकार्धं श्लोकपादं वा वरं भागवतं गृहे।
शतशोऽथ सहस्रैश्च किमन्यैः शास्त्रसङ्ग्रहैः।।

(हरिभक्तिविलास १०.३८१)

श्लोकार्थं श्लोकपादं वा नित्यं भागवतोद्भवम्।
पठेत्शृणोति वा भक्त्या गोसहस्रं फलं लभेत्।।

(हरिभक्तिविलास १०.३८८)

भागवतजी का आधा श्लोक भी जो प्रतिदिन पढ़ लेता है, उसको किसी न किसी दिन भगवान् दर्शन देते ही हैं। तो चलिए-

जन्माद्यस्य यतोऽन्वयादितरतश्चार्थेष्वभिज्ञः स्वराट्
तेने ब्रह्म हृदा य आदिकवये मुह्यन्ति यत्सूरयः।
तेजोवारिमृदां यथा विनिमयो यत्र त्रिसर्गोऽमृषा
धाम्ना स्वेन सदा निरस्तकुहकं सत्यं परं धीमहि।।

(भा०पु० १.१.१)

सत्यं परं धीमहि- यही मुख्य वाक्य है। हम उन परमेश्वर का निरन्तर ध्यान करें। परं माने परमेश्वरम्, परमेश्वर का निरंतर ध्यान करें। परं सदा धीमहि-किन परमेश्वर का सदा ध्यान करें? जो हमारे जीवन में कम से कम दस रूप में आते हैं। अब उनके दस विशेषण देखिये। एक-एक विशेषण में एक-एक अवतार का संकेत देखिये।

(१) जन्माद्यस्य यतः- जिन परमेश्वर की कृपा से इस जगत् का जन्म भी होता है, पालन भी होता है और संहार भी होता है, यह कच्छप अवतार। ये कच्छप भगवान् पृथ्वी को धारण करते हैं तो इसी पृथ्वी और जगत् का जन्म होता है। इसी पृथ्वी पर पालन होता है और शरीर जब छूटता है तो माटी-माटी विलीन हो जाता है, इसी पृथ्वी में व्यक्ति विलीन होता है। यह पहला अवतार। जन्माद्यस्य यतः यह प्रथम अवतार। बहुत अच्छा वर्णन है! ऐसे परं ब्रह्म धीमहि, जिन्होंने कच्छप अवतार धारण किया। यदि कच्छप भगवान् न होते तो मन्दराचल रसातल में चला गया होता, समुद्र का मंथन न होता, अमृत न निकलता। इन्हीं कच्छप भगवान् ने-

पृष्ठे भ्राम्यदमन्दमन्दरगिरिग्रावाग्रकण्डूयनान्
निद्रालोः कमठाकृतेर्भगवतः श्वासानिलाः पान्तु वः।
यत्संस्कारकलानुवर्तनवशाद्वेलानिभेनाम्भसां
यातायातमतन्द्रितं जलनिधेर्नाद्यापि विश्राम्यति।।

(भा०पु० १२.१३.२)

जब गणेशजी ने कहा- "मेरी पूजा नहीं की है, मैं विघ्न डालूँगा।" भगवान् ने कहा- "तुम विघ्न क्या डालोगे? मेरा स्मरण तो सबने किया ही है।"

सकल विघ्न ब्यापहिं नहिं तेही।
राम सुकृपा बिलोकहिं जेही।।

(रा०च०मा० १.३९.५)

तुरन्त कच्छप अवतार ने पीठ पर लिया मन्दराचल पर्वत और भगवान् घूमा रहे हैं। कच्छप भगवान् को नींद आ गयी, उनको आनन्द आ रहा है। उसी नींद में जब श्वास ऊपर लेते हैं तो सागर में भाटा आता है और जब छोड़ते हैं तो ज्वार आता है। आज भी भगवान् के श्वास का ही अनुकरण सागर करता है। भगवान् की श्वास ऊपर गयी तो भाटा आ गया सागर में और छोड़ा तो ज्वार आ गया। कृष्णपक्ष में भाटा और शुक्ल पक्ष में ज्वार। कृष्णपक्ष में समुद्र का पानी अंदर आता है और शुक्लपक्ष में बाहर

आता है। और कभी ऊँचा श्वास छोड़ा, तो सुनामी आ जाती है, आनन्द हो जाता है।

(२) अन्वयात् (भा०पु० १.१.१)– अब मत्स्य अवतार। अन्वयात्– भगवान् ने अनुगमन किया। किसका? सत्यव्रत मनु का। मछली बने भगवान्। कहा– "राजन्! मुझे निवास दीजिये। "बाल्टी में रखा, बाल्टी भर गयी। कुटिया में रखा, कुटिया भी भर गयी। "राजन्! मुझे निवास दीजिये।" बाल्टी में रखा, बाल्टी भर गयी। कुटिया में रखा, कुटिया भी भर गयी। "राजन्! दूसरा स्थान बताइये।" "ठीक है!" तालाब में रखा, तालाब भर गया। नदी में रखा, नदी भर गयी। तो मनु बहुत दुःखी हुए–

सद्योजात गीत

ऐसे मछली विशाल को बिठाऊँ कैसे?
विनय करत मनुहारि बहुत विधि।
मान निहारो मेरो विफल सकल विधि।।
हाय राम इनको मनाऊँ कैसे?
ऐसे मछली विशाल को बिठाऊँ कैसे?
छिन छिन बढ़त विमल याकी देहिया।
घटत न निरखी हमार यापे नहेया।।
ठाऊँ मोरे मिलन बसाऊँ कैसे?
ऐसे मछली विशाल को बिठाऊँ कैसे।।
काहूँ न समात विपुल याको विग्रह।
कुटिया सरोह सरिस सिन्धु व्यापी यह।।
एक अणु महिन समाऊँ कैसे?
ऐसे मछली विशाल को बिठाऊँ कैसे?
मत्स्य रूप धरी भगवान् यहाँ आये।
डूबते मनु और मही को बचाये।।
"गिरिधर" लघु उर अमाऊँ कैसे?
ऐसे मछली विशाल को बिठाऊँ कैसे?

यह देखिये! यह गीत तत्काल ही बनाया मैंने और इसके स्वर कैसे सेट किये मैं भी नहीं जानता। अब इस पर रामवीरजी कोई कमेन्ट्री करें तो, बोलिये रामवीरजी! रामवीरजी कह रहे हैं–गिरा अनयन नयन बिनु बानी (रा०च०मा० १.२२९.२)। सब लोग कह रहे हैं कि मैंने बहुत अच्छा गाया। पर मैंने कैसे गाया? यह मैं नहीं जानता। यह किसी ने गवाया, मैंने नहीं गाया। ऐसे मछली विशाल को बिठाऊँ कैसे? यह विन्ध्यवासिनी माँ ने गवा दिया।

तो मैं कह रहा हूँ, यह भगवान् का अन्वयात् (भा०पु० १.१.१) है। भगवान् मनुजी की प्रत्येक इच्छा का अनुगमन करते रहे। जहाँ सत्यव्रतजी गये, वहाँ पीछे-पीछे गये। कुटिया में रखा, बड़े हो गये। सरोवर में रखा, बड़े हो गये। नदी में रखा, बड़े हो गये। सागर में रखा, बड़े हो गये। अन्वयात् – यह द्वितीय मत्स्य अवतार की कथा कही। पुनः–

गिरिधर लघु उर अमाऊँ कैसे?
ऐसे मछली विशाल को बिठाऊँ कैसे?

ये हुआ अन्वयात्।

(३) इतरतः (भा०पु० १.१.१)– अब तीसरा इतरतः! तीसरा जो विशेषण है, यह शूकर अवतार के लिए है। इतरंहिरण्याक्षं तनोति, युद्ध माध्यमेन विस्तरति अथवा तामयति।

हिरण्याक्ष के यश को विस्तृत कर रहे हैं भगवान् और हिरण्याक्ष को मार रहे हैं। इतरतः– पृथ्वी को हिरण्याक्ष ने चुरा लिया।

शोक कनकलोचन मति छोनी।
हरी बिमल गुनगन जग जोनी।।
भरत बिबेक बराह बिशाला।
अनायास उधरी तेहि काला।।

(रा०च०मा० २.२९७.३-४)

ब्रह्माजी ने मनु से कहा– "बेटे! अब प्रजा की सृष्टि करो।" मनुजी ने कहा– "मैं क्या करूँ? पृथ्वी तो है ही नहीं!" अस्या उद्धरणे यत्रो देव देव्या विधीयताम् (भा०पु० ३.१३.१५)– "भगवन्! इनको लाया जाये, पृथ्वी तो दिख नहीं रहीं। क्या करें?" तो ब्रह्माजी चिन्तित। चिन्ता करते-करते ब्रह्माजी अपनी नाक में अँगुली डालकर खोदने लगे। तब ब्रह्माजी के नाक के दाहिने छिद्र से– वराहतोको निरगादङ्गुष्ठपरिमाणकः (भा०पु० ३.१३.१८) सूअर का

बच्चा निकला, प्रकट हुआ भगवान् प्रकट हुए। अंगूठे के आकार के वराह। सबके देखते-देखते इतरतः (भा०पु० १.१.१) इतरान् तनोति। सबको धन्य कर दिया। ब्रह्माजी ने देखा, सनकादिकों ने देखा, नारदजी ने देखा, ऋषियों ने देखा- गजमात्रः प्रववृधे तदद्भुतमभून्महत् (भा०पु० ३.१३.१९)-हाथी के बराबर हो गये भगवान्। सबके देखते-देखते-भगवान् यज्ञपुरुषो जगर्जागेन्द्रसन्निभः (भा०पु० १.१३.२३) घुरघुराये, गरजे और-

निशस्य ते घर्घरितं स्वखेद क्षयिष्णु मायामयसूकरस्य।
जनस्तपः सत्यनिवासिनस्ते त्रिभिः पवित्रैर्मुनयोऽगृणन् स्म।।

(भा०पु० ३.१३.२५)

भगवान् आकाश में चले गये सबके देखते-देखते और फिर आकाश में जाकर भगवान् कूद पड़े सागर में ढूँढ़ रहे हैं पृथ्वी को-

घ्राणेन पृथ्व्याः पदवीं विजिघ्रन् क्रोडापदेशः स्वयध्वराङ्गः।
करालदंष्ट्रोऽप्यकरालदृग्भ्यामुद्वीक्ष्य विप्रान् गृणतोऽविशत्कम्।।

(भा०पु० ३.१३.२८)

नाक से पृथ्वी को सूँघ रहे हैं- "कहाँ है पृथ्वी?" गंधवती है न! ढूँढ़ रहे हैं- "कहाँ हो भाई?" जैसे हमारे जौनपुर में पत्नी को उसका पति कहता है- "अरे! कहाँ बाटों हो?" इसी प्रकार ढूँढ़ रहे हैं भगवान् - "तुम गन्धवती हो!" और घ्राणो गन्धो गुणो गन्धः इसलिए नाक से ढूँढ रहे हैं- घ्राणेन पृथ्विव्याः पदवीं विजिघ्रन्। यहाँ ढूँढ़ रहे हैं- "कहाँ हो भाई?" सारे यज्ञ भगवान् के अंग में हैं। भगवान् की खाल बहुत कराल है और कोमल नेत्रों से भगवान् ब्राह्मणों को देख रहे हैं। खुरैः क्षुरप्रैर्दरयंस्तदाप (भा०पु० ३.१३.३०) कूद पड़े भगवान् जल में। उत्पारपारं त्रिपरू रसायाम् (भा०पु० ३.१३.३०) गर्भोदक में चले गये। सारे पातालों में ढूँढ़ा, नहीं मिलीं पृथ्वी। गर्भोदक में जाकर छिपाकर रखा था। भगवान् आये, पृथ्वी गद्गद हो गयी। पृथ्वी भावुक! प्रभु आ गये और पृथ्वी को उठाया- "सो रही हो?" यां जीवधानीं स्वयमभ्यधत्त (भा०पु० ३.१३.३०) पृथ्वी को दाँत पर रखा प्रभु ने-

तमालनीलं सितदन्तकोट्या क्ष्मामुत्क्षिपन्तं गजलीलयाङ्ग।
प्रज्ञाय बद्धाञ्जलयोऽनुवाकैर्विरिञ्चिमुख्या उपतस्थुरीशम्।।

(भा०पु० ३.१३.३४)

प्रभु पृथ्वी को दाँत पर रख रहे हैं- "पृथ्वि! इतनी रूठ गयी हो मुझसे? हिरण्याक्ष चुरा लाया आपको?" पूरा स्वाद भगवान् ने भर दिया अतः इतरतः (भा०पु० १.१.१) इलाम् तारयति इति इतरयतः अर्थात् इला माने पृथ्वी को भगवान् ला रहे हैं।

अद्भुत आनन्द कर रहे हैं भगवान्। हिरण्याक्ष आता है। जघान रुन्धानमसह्यविक्रमं (भा०पु० ३.१३.३३) भगवान् हिरण्याक्ष को युद्ध में मारकर पृथ्वी को लाये। देवता प्रसन्न।

ऋषय ऊचुः

जितं जितं तेऽजित यज्ञभावन-
त्रयीं तनुं स्वां परिधुन्वते नमः।
यद्रोमगर्तेषु निलिल्युरद्धयस्तस्मै-
नमः कारणसूकराय ते।।

(भा०पु० ३.१३.३५)

देवता फूलों की वर्षा कर रहे हैं। यह हुआ वाराह अवतार-

विजयी समर बीर बिख्याता।
धरि बराह बपु एक निपाता।।

(रा०च०मा० १.१२२.७)

कच्छप अवतार- जन्माद्यस्य यतः, मत्स्य अवतार- अन्वयात्, वराह अवतार- इतरतः।

(४) चार्थेष्वभिज्ञः (भा०पु० १.१.१)- अब चतुर्थ अवतार नृसिंह अवतार। भक्तों के मनोरथों को भगवान् जानते हैं कि भक्त क्या चाहते हैं। इसलिए नृसिंह भगवान् अथवा चार्थेष्वभिज्ञः- चकारः चतुरवाची चतुर्णाम्, आर्त्त जिज्ञासु अर्थार्थी ज्ञानिनाम्, अर्थेषु मनोरथेषु अभिज्ञः। अर्थात्

भगवान् चारों प्रकार के भक्तों का मनोरथ जानते हैं- आर्त को क्या चाहिए, जिज्ञासु को क्या चाहिए, अर्थार्थी को क्या चाहिए और ज्ञानी को क्या चाहिए। भगवान्

जानते हैं। प्रह्लाद ने कहा– "भगवान्! सभी लोग आपकी सत्ता चाहते हैं, जो वेद ने कहा सर्वव्यापकता, वह प्रत्यक्ष दिखा दीजिये।" प्रह्लाद भगवान् के दर्शन चाहते हैं। सुर नर मुनि सब कै यह रीति (रा०च०मा० ४.१२.२) देवता, मनुष्य, मुनि सब यही चाहते हैं चारों प्रकार के भक्त आर्त, जिज्ञासु, अर्थार्थी और ज्ञानी सबका एक ही मनोरथ है– "भगवान् प्रकट हो जाएँ।" बिप्र धेनु सुर सन्त हित लीन्ह मनुज अवतार (रा०च०मा० १.१९२) बस प्रकट हो रहे हैं।

सत्यं विधातुं निजभृत्यभाषितं
व्याप्तिं च भूतेष्वखिलेषु चातमनः।
अदृश्यतात्यद्भुतरूपमुद्वहन्
स्तम्भे सभायां न मृगं न मानुषम्।।

(भा०पु० ७.८.१८)

भगवान् ने भक्त की वाणी सत्य कर दी। हिरण्यकशिपु ने खम्भे में मुक्का मारा–कस्मात्स्तम्भे न दृश्यते (भा०पु० ७.८.१३) भगवान् खम्भे को फाड़कर प्रकट हो गए। चार्थेष्वभिज्ञः (भा०पु० १.१.१)–चार्थेषु माने चतुर्णाम् अर्थेषु चतुर्णाम् अर्थाचारता तेषु, चार्थेषु और हमारे व्याकरण में चार्थेषु द्वंद्वः तो चारों प्रकार का अर्थ– (क) भगवान् समुच्चय भी जानते हैं, (ख) अनुवाच्य भी जानते हैं, (ग) इतरेतर योग भी जानते हैं, (घ) समाहार भी जानते हैं। भगवान् खम्भे को फाड़कर प्रकट हो रहे हैं, हिरण्यकशिपु के वक्षःस्थल को फाड़कर फेंक दिया भगवान् ने–

विष्वक्स्फुरन्तं ग्रहणातुरं हरि-
र्व्यालो यथाखुं कुलिशाक्षतत्वचम्।
द्वार्यूरुमापत्य ददार लीलया
नखैर्यथाहि गरुडो महाविषम्।।

भा०पु० ७/८/२९

जैसे गरुड़ साँप को फाड़ देता है, उसी प्रकार भगवान् ने हिरण्यकशिपु को फाड़कर फेंक दिया। यह है चतुर्थ अवतार। चार्थेष्वभिज्ञः (भा०पु० १.१.१)।

(५) स्वराट् (भा०पु० १.१.१)– अब पञ्चम अवतार स्वराट्। वामन अवतार में भगवान् स्वराट् स्वेन राजते अपनों से ही सुशोभित होते हैं। छोटे से हैं– बभूव तेनैव स वामनो वटुः (भा०पु० ८.१८.१२)। जब बलि ने ९९वें यज्ञ कर लिए, अदिति दुःखी हुई। अदिति ने कहा– "भगवन्! जब इन्द्र भिखारी बन जायेंगे, तो मैं क्या करूँगी? आ जाइये न!" तो भगवान् छोटे से बालक बन गये। अदिति ने कहा–

सद्योजात गीत

वामन स्वरूप तेरी जय तेरी जय हो।।
शंख चक्र गदा पद्म चार भुजाधारी।
श्यामल शरीर प्रभु भक्त भयहारी।।
भग्न भव कूप तेरी जय तेरी जय हो।
वामन स्वरूप तेरी जय तेरी जय हो।।
कश्यप के बारे माँ अदिति के दुलारे।
रामभद्राचार्य के विलोचन के तारे।।
परम अनूप तेरी जय तेरी जय हो।
वामन स्वरूप तेरी जय तेरी जय हो।।

'सविनयं राजते' अपने उपकरणों से भगवान् सुन्दर लग रहे हैं। अदिति ने कौपीनाच्छादनं माता (भा०पु० ८.१८.१५) अचला दिया। कश्यप ने मेखला दी। भिन्न–भिन्न लोगों ने– बृहस्पतिर्ब्रह्मसूत्रं (भा०पु० ८.१८.१४) बृहस्पतिजी ने यज्ञोपवीत दिया। कमण्डलुं वेदगर्भः (भा०पु० ८.१८.१६)–ब्रह्माजी ने कमण्डलु दिया। भिक्षां भगवती साक्षादुमादादम्बिका सती (भा०पु० ८.१८.१७)–पार्वतीजी ने भिक्षा दी। अपनी विभूतियों से भगवान् सुन्दर लग रहे हैं आज।

श्रुत्वाश्वमेधैर्यजमानमूर्जितं बलिं भृगूणामुपकल्पितैस्ततः।
जगाम तत्राखिलसारसम्भृतो भारेण गां सन्नमयन् पदे पदे।।

(भा०पु० ८.१८.२०)

भगवान् आ रहे हैं। वामन को देखकर सब लोग उठकर खड़े हो गये– "क्या चाहते हो?" भगवान् ने कहा– "केवल तीन पग भूमि"– तस्मात्त्रीणि पदान्येव वृणे त्वद्वरदर्षभात् (भा०पु० ८.१९.२७)। और जब विराट् बने तो स्वराट् बन गये। '**सुन राजते स्वराट स्वे शाम**

रात' सबके राजा बन बैठे भगवान्। यह पाँचवाँ अवतार– वामन अवतार।

(६) तेने ब्रह्म हृदा य आदिकवये (भा०पु० १.१.१)– जिन्होंने संकल्प से ही आदि कवि ब्रह्माजी की प्रसन्नता के लिए ब्रह्मवर्चस्व का विकास किया। ''तेने ब्रह्म'' सहस्रबाहु ने ब्राह्मणों को दबाया और परशुरामजी की अनुपस्थिति में कामधेनु को ले गया। ''अच्छा! मैंने कहा कि जाओ!'' परशुरामजी ने कहा– ''देखो! हम लोग ब्राह्मण हैं।'' सहस्रबाहु ने कहा– ''जा! जा!! तुझ जैसे बहुत भिखमंगे ब्राह्मणों को देखा।'' परशुरामजी ने कहा– ''अच्छा! हम भीखमंगे हैं, ठीक हैं फिर!'' तो एक श्लोक कहा। पुराण का है। परशुरामजी ने कहा–सुनो।

सहस्रबाहुसोत्तमबाहु त्वं सैन्य युक्तः अहं एकमेव त्वं चक्रवर्ती मुनिनन्दनो अहं तथापि नैव पश्यामि तर्क मरक सहस्रबाहुसोतमबाहु– तुम्हारे पास एक हजार हाथ हैं और मेरे पास दो हाथ हैं। तुम्हारे पास बड़ी सेना है मैं अकेला हूँ, तुम चक्रवर्ती सम्राट् हो और मैं मुनि का एक बेटा हूँ। फिर भी आज हम दोनों का युद्ध देखें सूर्यनारायण! जो कुछ होगा, होगा–

भुजबल भूमि भूप बिनु कीन्हीं।
बिपुल बार महिदेवन दीन्हीं।।
सहसबाहु भुज छेद निहारा।
परशु बिलोकु महीपकुमारा।।

(रा०च०मा० १.२७२.७–८)

तेने ब्रह्म हृदा य आदिकवये (भा०पु० १.१.१)। ब्रह्म– ब्रह्माजी को संतुष्ट करने के लिए अथवा आदिकवये– आदिकवि वाल्मीकिजी को संतुष्ट करने के लिए। हृदा– अपने संकल्प से, ब्रह्म माने ब्रह्मा को विकसित किया और आदिकवि को लिखना पड़ा–

धिग् बलं क्षत्रियबलं ब्रह्मतेजोबलं बलम्।
एकेन ब्रह्मदण्डेन सर्वास्त्राणि हतानि मे।।

(वा०रा० १.५६.२३)

ब्राह्मण का वर्चस्व बता दिया। यह छठा अवतार। तेने ब्रह्म हृदा य आदिकवयेः (भा०पु० १.१.१)

(७) मुह्यन्ति यत्सूरयः (भा०पु० १.१.१)– अब सातवें अवतार की चर्चा बहुत अच्छी करते हैं। सातवाँ अवतार भगवान् रामजी का अवतार है। इसलिए गोस्वामीजी ने सातकाण्ड कहे। यह प्रभु का सप्तम अवतार। सात है– मन्वन्तरी अवतार।

मुह्यन्ति यत्सूरयः इतना सुन्दर अवतार है यह! बड़े–बड़े विद्वान् रामावतार में मोहित हो जाते हैं।

भए प्रगट कृपाला दीनदयाला कौसल्या हितकारी।
हरषित महतारी मुनि मन हारी अद्भुत रूप निहारी।।
लोचन अभिरामा तनु घनश्यामा निज आयुध भुज चारी।
भूषन बनमाला नयन बिशाला शोभासिन्धु खरारी।।

(रा०च०मा० १.१९२.१)

बड़े–बड़े लोग मोहित। यहाँ माताजी भी मोहित हो गयीं– मुह्यन्ति यत्सूरयः।

भगवान् की पाँच लीलाएँ– बाललीला, विवाहलीला, वनलीला, रणलीला और राज्यलीला। इन पाँचों लीलाओं में कम से कम एक व्यक्ति मोहित हुआ।

(क) **बाललीला–** इस लीला में भुशुण्डिजी मोहित हो गये।

किलकत मोहि धरन जब धावहिं।
चलउँ भागि तब पूप देखावहिं।।

(रा०च०मा० ७.७७.१०)

देखिये भुशुण्डिजी–

प्राकृत शिशु इव लीला देखि भयउ मोहि मोह।
कवच चरित्र करत प्रभु चिदानंद संदोह।।

(रा०च०मा० ७.७७ख)

बाललीला में भुशुण्डिजी मोहित हो गये थे। मुह्यन्ति यत्सूरयः (भा०पु० १.१.१)।

(ख) **विवाहलीला–** विवाह लीला में ब्रह्माजी स्वयं मोहित हो गये–

बिधिहिं भयउ आचरज बिशेषी।
निज करनी कछु कतहुँ न देखी।।

(रा०च०मा० १.३१४.८)

ब्रह्माजी तो अपनी करनी देखने लगे– ''अरे! यहाँ

तो मेरी कोई रचना ही नहीं है। किसने बनाया?'' शिवजी ने कहा– ''ब्रह्माजी! आपका हाल तो एक कलियुगी बच्चे की भाँति है। आजकल का एक बच्चा था। एक दिन उसने कहा अपने माँ से– ''मम्मी! मैं तुम्हारी मैरिज का एलबम देखना चाहता हूँ।'' तो मम्मी ने एलबम दिखा दिया– ''यह देखो!'' यह घंटे तक लड़का देखता रहा। सबको बताया– ''यह तुम्हारी माँ यानि मैं दुल्हन बनी हुई, ये तुम्हारे पापा, ये तुम्हारी नानी, ये तुम्हारी मौंसी, ये तुम्हारे मौसा, ये तुम्हारे मामी-मामा।'' एक घंटे तक लड़का देखता रहा, फिर बंद कर दिया एलबम और रोने लगा। तो मम्मी ने कहा– ''रो क्यों रहे हो?'' कहा– ''मम्मी! इसमें मैं नहीं था?'' मुह्यन्ति यत्सूरयः (भा०पु० १.१.१)।

(ग) **वनलीला-** सीताजी के लिए भगवान् राम विलाप कर रहे हैं–

हे खग मृग हे मधुकर श्रेनी।
तुम देखी सीता मृगनैनी।।

(रा०च०मा० ३.३२.९)

और शिवजी ने प्रणाम कर लिया–

जय सच्चिदानन्द जगपावन।
अस कहि चले मनोज नसावन।।

(रा०च०मा० १.५०.३)

और सतीजी को मोह हो गया–

तिन नृपसुतहिं कीन्ह परनामा।
कहि सच्चिदानंद परधामा।।

(रा०च०मा० १.५०.७)

मुह्यन्ति यत्सूरयः (भा०पु० १.१.१)।

(घ) **रणलीला-** इस लीला में गरुड़ जी को मोह हो गया–

भव बंधन ते छूटहिं नर जपि जाकर नाम।
खर्ब निशाचर बाँधेउ नागपाश सोइ राम।।

(रा०च०मा० ७.५८)

''अरे! जिनका नाम जप करके, बड़े-बड़े ज्ञानी भवबंधन से छूट जाते हैं, उन्हीं रामजी को मेघनाद ने बाँध लिया नागपाश में?'' रणलीला में गरुड़जी को मोह हो गया– मुह्यन्ति यत्सूरयः (भा०पु० १.१.१)।

(ङ) **राज्यलीला-** राज्यलीला में गुरुदेव वसिष्ठजी को मोह हो गया, जब भगवान् ने–

अति आदर रघुनायक कीन्हा।
पद पखारि चरणोदक लीन्हा।।

(रा०च०मा० ७.४८.२)

जब हुआ रामजी ने चरणोदक लिया।

देखि देखि आचरण तुम्हारा।
होत मोह मम हृदय अपारा।।

(रा०च०मा० ७.४८.४)

मुह्यन्ति यत्सूरयः (भा०पु० १.१.१)।

यह भगवान् का राम अवतार।

मुह्यन्ति यत्सूरयः (भा०पु० १.१.१) यहाँ सबको मोह हो रहा है।

(८) तेजोवारिमृदां यथा विनिमयो यत्र त्रिसर्गोऽमृषा (भा०पु० १.१.१)–अब आठवाँ अवतार! जिस प्रकार तेज का भ्रम, जल में हो जाता है, जिस प्रकार मिट्टी में, रणभूमि में, जल में तेज का भ्रम हो जाता है। इसी प्रकार बड़े-बड़े देवताओं को मोह हो गया–

उमा राम गुन गूढ़ पंडित मुनि पावहिं बिरति।
पावहिं मोह बिमूढ़ जे हरि बिमुख न धर्म रति।।

(रा०च०मा० ३. मङ्गलाचरण सोरठा १)

अब आगे सुनिये, बहुत अच्छा वर्णन है। अब आठवाँ अवतार है बलरामावतार।

यह भगवान् का आठवाँ अवतार है। बलरामजी भगवान् के आठवें अवतार हैं। अद्‌भुत आनन्द है इनका! देवकी के ६ पुत्रों के मर जाने के पश्चात् भगवान्–

सप्तमो वैष्णवं धाम यमनन्तं प्रचक्षते।
गर्भो बभूव देवक्या हर्षशोकविवर्धनः।।

(भा०पु० १०.२.५)

भगवान देवकी के गर्भ में आ रहे हैं। वे अनन्त हैं, उनका कभी नाश नहीं होगा। ये भगवान् ही हैं, शेष बन लेते हैं। सङ्कर्षणं द्वितीयं व्यूहः।

भगवान् ने योगमाया से कहा– ''इनको रोहिणी के गर्भ में ले चलो।'' देवकी के गर्भ से योगमाया ने रोहिणी

के गर्भ में पहुँचाया और श्रीकृष्ण भगवान् के जन्म से एक वर्ष पहले हलषष्ठी के दिन भादों कृष्ण पक्ष की षष्ठी के दिन बलरामजी का जन्म हो रहा है। जय-जयकार हो रही है। यत्र त्रिसर्गोऽमृषा (भा०पु० १.१.१)

देवता प्रसन्न हो रहे हैं, फूल बरसाना चाहते हैं चारों ओर। भगवान् ने कहा- "अभी नहीं! चुप! चुप!!" बलराम ने कहा- "नहीं! जब कृष्ण भगवान् जन्म ले लेंगे, तब मेरी लीला प्रारम्भ होगी।" एक वर्ष तक बलरामजी ने अपनी आँखे नहीं खोलीं। सोचिये! "आँखे तभी खोलूँगा, जब परमात्मा कृष्णचन्द्र आ जायेंगे।" ये सब बातें आपको कौन सुनायेगा भागवत में? सोचिये तो, एक वर्ष तक बलरामजी ने आँखे नहीं खोलीं। यत्र त्रिसर्गोऽमृषा (भा०पु० १.१.१) तीन लीलाएँ भगवान् ने कीं- (क) ब्रजलीला, (ख) मथुरालीला और (ग) द्वारका लीला। तीनों में बलरामजी ने श्रीकृष्णजी का समर्थन ही किया। इसलिए गोस्वामीजी कहते हैं-

जन मन मंजु कंज मधुकर से।
जीह जसोमति हरि हलधर से।।

(रा०च०मा० १.२०.८)

ब्रज में साथ-साथ रहे। श्रीकृष्ण भगवान् बहुत आदर करते हैं बलरामजी का। अवतार हैं न। जब प्रलम्बासुर आता है और प्रलम्बासुर बलराम भगवान् को लेकर आकाश में उड़ता है, तो सब लोग डर जाते हैं। बलरामजी थोड़ा-सा डरते हैं। कन्हैयाजी कहते हैं- "नहीं! नहीं!! नहीं!!! आप परमेश्वर हैं भगवन्। मारिये खींचकर!" एक मुक्का मारा खींचकर...प्रलम्बासुर मर गया। बहुत प्रेम करते हैं बलरामीजी को, बहुत प्रेम! और मथुरा में तो यही कहा- एतदर्थं हि नौ जन्म साधूनामीश शर्मकृत् (भा०पु० १०.५०.१४)। बलरामजी की वन्दना बहुत तो नहीं मिलती। स्वप्नवासवदत्तम् का यह श्लोक देखिये-

उदयनवेन्दुसवर्णावासवदत्ताबलौ बलस्य त्वाम्।
पद्मावतीर्णपूर्णौ वसन्तकम्रौ भुजौ पाताम्।।

(स्व०वा०द० १.१)

बलरामजी की कितनी सुन्दर भुजाएँ हैं! उदयनवेन्दु-सवर्णौ गौर वर्ण के हैं बलरामजी और आसवदत्ताबलौ बलस्य त्वाम्। लोग कहते हैं कि बलरामजी मदिरा पीते हैं, परन्तु ऐसा नहीं है। बलरामजी निरन्तर भगवान् कृष्ण की प्रेम मदिरा पीये रहते हैं। हल-मूसल हमेशा हाथ में रखते हैं, जिससे बड़े-बड़े दैत्यों का नाश किया बलरामजी ने। यह हुआ आठवाँ अवतार।

सूर चिरजीवौ दोउ भैया, हरि-हलधर की जोटी- बहुत सुन्दर जोड़ी है। यत्र त्रिसर्गोऽमृषा (भा०पु० १.१.१)

बलरामजी सब कुछ सत्य कहते हैं कन्हैयाजी के लिए। ब्रज में तीन लीलाएँ भगवान् ने कीं- (क) वेणु माधुरी, (ख) रूप माधुरी, (ग) लीला माधुरी। तीनों को बलरामजी ने देखा। आनन्द करते रहे भगवान बलराम। पशुपालबलश्चुकूज वेणुम् (भा०पु० १०.२१.२)-वेणु माधुरी देखी भगवान् की। रूप माधुरी निहारते रहे भगवान् की। लीला माधुरी देखी तो ब्रज लीला को सत्य माना और मथुरा लीला में श्रीकृष्ण के साथ युद्ध करते रहे। बलरामजी ने जरासंध को मारना चाहा तो भगवान् श्रीकृष्ण ने मना किया, तुरन्त भगवान् मान गये- "कन्हैया जो कहे, सब ठीक!" और द्वारका लीला में भी तटस्थ आनन्द किया बलरामजी ने। अर्जुन के सारथी बने श्रीकृष्णजी, बलरामजी आनन्द करते रहे। तीर्थयात्राएँ करते हुए भगवान् की लीलाएँ देखते रहे बलरामजी। यत्र त्रिसर्गोऽमृषा (भा०पु० १.१.१)

(९) धाम्ना स्वेन सदा निरस्तकुहकम् (भा०पु० १.१.१)-अब नौवाँ अवतार भगवान् श्रीकृष्ण का। अपने तेज से ही भगवान् ने बड़े-बड़े दैत्यों को मारा। भागवत में कहते हैं कि भगवान् ने ११ वर्ष तक ब्रज में निवास किया-एकादश समास्तत्र गूढार्चिः सबलोऽवसत् (भा०पु० ३.२.२६)। ग्यारह वर्ष तक निवास किया और ग्यारह वर्ष के निवास के कार्यकाल में जितने दैत्यों को मारा, वहाँ कोई हथियार नहीं उठाया भगवान् ने। आप देखेंगे, ब्रज में भगवान् ने कभी भी चक्र का प्रयोग नहीं किया। ब्रज में शस्त्र नहीं उठाया, ब्रज में पनहिया नहीं धारण कीं। ब्रज में किसी वाहन पर नहीं बैठे भगवान्। और ब्रज में

सिला हुआ वस्त्र भी धारण नहीं किया भगवान् ने। केवल– धाम्ना स्वेन सदा निरस्तकुहकम् अर्थात् अपने तेज से आनन्द किया।

जैसे पूतना को भगवान् मार रहे हैं। आप बताइये! कोई हथियार उठाया भगवान् ने? बिना हथियार के–

तस्मिन् स्तनं दुर्जरवीर्यमुल्बणं
घोराङ्कमादाय शिशोर्ददावथ।
गाढं कराभ्यां भगवान् प्रपीड्य तत्
प्राणैः समं रोषसमन्वितोऽपिबत्।।

(भा०पु० १०.६.१०)

पूतना के प्राणों को पी लिया भगवान् ने। हथियार नहीं उठाया क्योंकि–धाम्ना स्वेन सदा निरस्तकुहकम्। शकटासुर– जिसने इन्द्र को घसीट–घसीटकर मारा था– उसको केवल अधः शयानस्य शिशोरनोऽल्पक प्रवालमृद्वङ्घ्रिहतं व्यवर्तत (भा०पु० १०.७.७)–केवल भगवान् ने चरण फटकार दिया अपना। भगवान् के चरण के लगते ही शकटासुर मर गया। भगवान् ने हथियार नहीं उठाया, क्योंकि–धाम्ना स्वेन सदा निरस्तकुहकम्। तृणावर्त भगवान् को उड़ाकर ले गया आकाश में। उसने सोचा– "छोड़ दूँगा गोवर्धन में!" भगवान् ने दौड़कर गला पकड़ लिया– गलग्रहणनिश्चेष्टो दैत्यो निर्गतलोचनः (भा०पु० १०.७.२८)। यहाँ भगवान् के तीन नाम हुए– (क) खेल रहे थे तो – छोटू सरकार, (ख) जब तृणावर्त उठाकर ले गया, तो भारी होने लगे तो– मोटू सरकार और (ग) दौड़कर गला घोंट दिया, तो भगवान् हो गये– घोंटू सरकार। आनन्द कर दिया! धाम्ना स्वेन सदा निरस्तकुहकम् (भा०पु० १.१.१)। वत्सासुर कितना घोर राक्षस! उसको मारने के लिए–गृहीत्वापरपादाभ्यां सहलाङ्गूलमच्युतः (भा०पु० १०.११.४३), उसको पीछे के चरणों से पकड़ा, घुमाया और कैंच के पेड़ पर पटक दिया। समाप्त। भगवान् ने हथियार नहीं उठाया। बकासुर ने भगवान् को मुँह में भर लिया। भगवान् ने ज्वाला प्रकट की, उगल दिया। दौड़ा– तमापतन्तं स निगृह्य तुण्डयोर्दोर्भ्यां बकं कंससखं सतां– पतिः (भा०पु० १०.११.५१)। भगवान् ने उसकी चोंच पकड़ीं–**पश्यत्सु बालेषु ददार लीलया मुदावहो वीरणवद्दिवौकसाम्** (भा०पु० १०.११.५१), बच्चों के देखते–देखते बकासुर की चोंच फाड़कर फेंक दी भगवान् ने। धाम्ना स्वेन सदा (भा०पु० १.१.१)–मतलब हथियार नहीं उठाये। धाम्ना अर्थात् अपने धाम से माने तेज से बड़े–बड़े राक्षसों को मार डाला। अघासुर ने सबको अपने मुँह में भर लिया। भगवान् भी चले गये और इतने विशाल बन गये कि उसको वायु निकलने का मार्ग नहीं मिला। सिर अपने आप फट गया, अघासुर मर गया। इसी प्रकार प्रलम्ब को और धेनकासुर को मरवा रहे हैं भगवान्। और आनन्द देखिये! शंखचूड़ गोपियों को चुराकर ले जा रहा था। गोपियाँ चिल्लायीं और जब चिल्लायीं, तब भगवान् ने जाकर थप्पड़ से मार दिया, शंखचूड़ मर गया धाम्ना स्वेन सदा निरस्तकुहकम्।

और आपको एक आनन्द बताऊँ! यहाँ बारह अक्षर हैं–धाम्ना स्वेन सदा निरस्तकुहकम्, क्योंकि बारह राक्षसों को भगवान् ने मारा और शस्त्र का प्रयोग नहीं किया। सोचिये आप! व्योमासुर सबको छिपा रहा था। देखा भगवान् ने, पकड़ा– पशुमारममारयत् (भा०पु० १०.३७.३२) पशु की भाँति पकड़–पकड़कर मार दिया। बिना हथियार के मारा। धाम्ना स्वेन सदा निरस्तकुहकम्– अपने तेज से ही राक्षसों को मार डाला भगवान् ने। अरिष्टासुर आया। अरिष्टासुर बछड़ा बनकर दौड़ा भगवान् के पास। भगवान् ने– तमापतन्तं स निगृह्य शृङ्गयोः (भा०पु० १०.३६.१३) आते हुए उसको पकड़ लिया और पकड़कर नीचे गिराया। निष्पीडयामास यथार्द्रमम्बरं कृत्वा (भा०पु० १०.३६.१३)– जैसे कोई गीले कपड़े को निचोड़ता है, उसी प्रकार मार दिया भगवान् ने। केशी घोड़े का रूप बनाकर आया, दौड़ा भगवान् के पास। समेधमानेन स कृष्णबाहुना (भा०पु० १०.३७.७)–भगवान् ने केशी के मुख में हाथ डाल दिया और भगवान् की भुजा इतना बढ़ी, इतनी बढ़ी कि उसका सिर अपने आप फट गया। (१) पूतना, (२) शकटासुर (३) तृणावर्त (४) बकासुर (५) अघासुर (६) वत्सासुर (७) धेनुकासुर (८) शंखचूड़, (९) व्योमासुर (१०)

केशी (११) ग्यारहवाँ कुवलियापीड़, बहुत खूनी हाथी है कंस का। उसको भगवान मार रहे हैं। उसी के हाथ से मार दिया भगवान् ने, हथियार नहीं उठाया। अब बारहवाँ अवतार भगवान् दौड़े। मल्लों की बात छोड़ दीजिये। (१२) कंस! कंस ने जब बहुत असभ्य बात कही– लघिम्नोत्पत्य तरसा मञ्चमुत्तुङ्गमारुहत् (भा०पु० १०.४४.३४), तो भगवान् उछलकर मंच पर चढ़ गये, बोले– "मामा! राम-राम!!" कंस ने कहा– "राम-राम"। बोले– "मामा! आपने मेरी माँ के केश पकड़े थे न?" कंस बोला– "हाँ!" "तो वही दण्ड दे रहा हूँ।" भगवान् ने कंस के केश पकड़ लिए–

प्रगृह केशेषु चलत्किरीतं निपात्य रङ्गोपरि तुङ्गमञ्चात्।
तस्योपरिष्टात्स्वयमब्जनाभः पपात विश्वाश्रय आत्मतन्त्रः।।

(भा०पु० १०.४४.३७)

प्रगृह्य केशेषु– कंस का केश पकड़ा भगवान् ने, रंगमंच से नीचे गिराया, मंच से रंगभूमि में गिराया और सारे संसार का भार लेकर कंस की छाती पर कूद पड़े भगवान्। सोचिये– धाम्ना स्वेन सदा निरस्तकुहकम्। इतने बड़े-बड़े राक्षसों को मारते समय भी भगवान् ने कोई हथियार नहीं लिया। यह है भागवत! यह है भगवान् का नौंवा अवतार! धाम्ना स्वेन सदा निरस्तकुहकम् (भा०पु० १.१.१)।

महाभारत में भी भगवान् ने हथियार नहीं उठाया। अपने तेज से ही मार रहे हैं सबको। अर्जुन से कहा भगवान् ने– "अर्जुन! तुम केवल निमित्त बन जाओ, मैंने इन सबको मार डाला।" अर्जुन ने देखा भी! अर्जुन कहते हैं– अमी च त्वां धृतराष्ट्रस्य पुत्राः सर्वे सहैवावनिपालसङ्घैः (भ०गी० ११.२६) धृतराष्ट्र पुत्र, भीष्म, द्रोण, कर्ण, –यह देखो, सब लोग आपके मुख में प्रवेश कर रहे हैं और आप चाट रहे हैं। भगवान् कहते हैं–अर्जुन!

द्रोणं च भीष्मं च जयद्रथं च
कर्णं तथान्यानपि योधवीरान्।
मया हतास्त्वं जहि मा व्यथिष्ठा
युध्यस्व जेतासि रणे सपत्नान्।।

(भ०गी० ११.३४)

जितने लोग हैं सभी को मैंने मार डाला है, क्योंकि– धाम्ना स्वेन सदा निरस्तकुहकम् (भा०पु० १.१.१)। अपने तेज से सबको मार डाला है भगवान् ने। उन्हें हथियार चलाने की आवश्यकता ही नहीं पड़ी। शिशुपाल आदि के लिए उठाया सुदर्शन चक्र, पर ब्रज में तो भगवान् ने कभी हथियार उठाया ही नहीं। यहाँ तो बस एक ही धुन सबको प्रिय है–

गीत

श्रीराधे गोविन्दा गोपाला हरि का प्यारा नाम है।
गोपाला हरि का प्यारा नाम है,
नंदलाला हरि का प्यारा नाम है।।
मोर मुकुट पीताम्बर धारी उर वैजयंती माला।
वृन्दावन में धेनु चराये मोहन मुरली वाला।।
श्रीराधे गोविन्दा गोपाला हरि का प्यारा नाम है....
नंद यशोदा को यह बारो संतन को रखवाला।
राधाजी को प्राण से प्यारो मोहन मुरली वाला।।
श्रीराधे गोविन्दा गोपाला हरि का प्यारा नाम है....
यमुना किनारे धेनु चरावे मोहन मदन मुरारि।
वृन्दावन में रास रचावे गोवर्धन गिरिधारी।।
श्रीराधे गोविन्दा गोपाला हरि का प्यारा नाम है....
मीरा के प्रभु गिरिधर नागर, सूर को श्यामल भाये।
नरसी को यह शाह साँवरिया "गिरिधर" को ललचाये।।
श्रीराधे गोविन्दा गोपाला हरि का प्यारा नाम है....
गोपाला हरि का प्यारा नाम है,
नंदलाला हरि का प्यारा नाम है।
श्रीराधे गोविन्दा गोपाला हरि का प्यारा नाम है....

धाम्ना स्वेन सदा निरस्तकुहकम् (भा०पु० १.१.१) अपने तेज से सारे कपटों को दूर किया भगवान् ने। यहाँ तक कि अपने तेज से दो बार ब्रह्माजी का भी मोह भंग करने के लिए सभी बछड़े और बच्चे भगवान् बने। इन्द्र का मद भंग किया, गोवर्धन उठाया भगवान् ने और कहना नहीं होगा, पाँचों भूतों की शुद्धि की भगवान् ने। क्योंकि– धाम्ना स्वेन सदा निरस्तकुहकम्।

(१०) अब सुनिये अंतिम अवतार। भगवान् द्वारका में तो आनन्द किये ही, परन्तु कलियुग में कल्कि अवतार को विलम्ब से आना था तो भगवान् ने दो उपाये किये। तब तक के लिए दो बातें कीं–

(क) श्रीमद्भागवतम् – एक तो श्रीमद्भागवत में प्रवेश कर गये कि लो! भले ही मैं गोलोक में रहूँ पर जब तक श्रीमद्भागवतम् रहेंगे, तब तक मेरी उपस्थिति का ज्ञान होता रहेगा। इन धूर्त वक्ताओं से पूछो! ऐसे शब्द मुझे नहीं बोलने चाहिएँ, पर बोल रहा हूँ कि यदि भागवतजी के श्लोक ही नहीं रहेंगे तो भगवान् के दर्शन होंगे कैसे? भागवत में भगवान छिप गये और दशम स्कन्ध में तो बड़ी अच्छी बात कहते हैं। जब राधाजी को भगवान् लेकर चल रहे हैं, राधाजी कहती हैं– न पारयेऽहं चलितुम् (भा०पु० १०.३०.३७) अब मैं नहीं चल पा रही हूँ कन्हैया! नय मां यत्र ते मनः (भा०पु० १०३०.३७) जहाँ तुम्हारा मन हो वहाँ ले चलो। एवमुक्तः प्रियामाह स्कन्ध आरुह्यतामिति (भा०पु० १०.३०.३८) तब भगवान् ने कहा–एक काम करो, स्कन्धे आरुह्यताम्। सामान्य अर्थ तो यही है कि कंधे पर बैठ जाओ अथवा पेड़ की डाल पर चढ़ते हैं। पर ऐसा नहीं! स्कन्धे आरुह्यताम् अर्थात् भगवान् ने कहा– "हे राधाजी! अब हम दोनों मिलकर भागवतजी के दशम स्कन्ध में ही छिप जाते हैं। जिनको ढूँढना होगा, दशम स्कन्ध में मुझे ढूँढ लेंगे।" स्कन्धे आरुह्यताम् – भागवतस्य दशम स्कन्धे आरुह्यताम्। तुरन्त भगवान् और राधाजी भागवतजी के दशम स्कन्ध में छिप गए। यदि भागवत के श्लोकों का चिन्तन नहीं होगा तो भैया पैसा तो मिल जायेगा, करोड़पति तो बन जाओगे, पर क्या करोगे करोड़पति बनकर।

(ख) जगन्नाथ– और दूसरा उपाय भगवान् ने किया कि भगवान् जगन्नाथपुरी में दारुक ब्रह्म के रूप में प्रकट हो गये। जगन्नाथ बने– सुभद्राप्राणनाथाय जगन्नाथाय मङ्गलम् (कर्पूर आरती मन्त्र ८) इधर बलरामजी सुभद्राजी और भगवान् कृष्णजी।

।।बोलिये जगन्नाथ भगवान् की जय हो।।

और अब– सत्यं परम धीमहि (भा०पु० १.१.१)– अब दसवाँ विशेषण देखिये।

(१) जन्माद्यस्य यतः–यह कच्छप अवतार। (२) अन्वयात् – मत्स्य अवतार, (३) इतरतः – वाराह अवतार, (४) चार्थेष्वभिज्ञः – नरसिंह अवतार, (५) स्वराट् – वामन अवतार, (६) तेने ब्रह्म हृदा य आदिकवये – परशुराम अवतार, (७) मुह्यन्ति यत्सूरयः – श्रीराम अवतार, (८) तेजोवारिमृदां यथा विनिमयो यत्र त्रिसर्गोऽमृषा– बलराम अवतार, (९) धाम्ना स्वेन सदा निरस्तकुहकम् – कृष्ण अवतार, (१०) सत्यं परम धीमहि – कल्कि अवतार।

सन्तों का हित कर रहे हैं भगवान्। कलियुग का अन्त हो रहा है।

अथासौ युगसन्ध्यायां दस्युप्रायेषु राजसु।
जनिता विष्णुयशसो नाम्ना कल्किर्जगत्पतिः।।

(भा०पु० १.३.२५)

शम्भलग्राममुख्यस्य ब्राह्मणस्य महात्मनः।
भवने विष्णुयशसः कल्किः प्रादुर्भविष्यति।।

(भा०पु० १२.२.१८)

उत्तर प्रदेश के संभल नामक ग्राम में विष्णुयश नामक ब्राह्मण के यहाँ भगवान् कल्कि अवतार ले रहे हैं।

।।बोलिये कल्कि भगवान की जय।।

भगवान् कल्कि सुन्दर घोड़े पर चढ़कर बिराज रहे हैं, हाथ में तलवार ली है और जो वेद का विरोध कर रहे हैं, भगवान् ने उन सबको काटकर फेंक दिया। अब उनकी छाया पड़ रही है। चकाचक होगा और राम मन्दिर बनेगा, निश्चित बनेगा। २०१८ तक बनेगा। इस प्रकार–

जन्माद्यस्य यतोऽन्वयादितरतश्चार्थेष्वभिज्ञः स्वराट्
तेने ब्रह्म हृदा य आदिकवये मुह्यन्ति यत्सूरयः।
तेजोवारिमृदां यथा विनिमयो यत्र त्रिसर्गोऽमृषा
धाम्ना स्वेन सदा निरस्तकुहकं सत्यं परं धीमहि।।

(भा०पु० १.१.१)

।।बोलिए दश अवतारों की जय।।

।।जय जय श्रीसीताराम।।